SEMINAL VESICLE CALCULUS

.Calculus formation in seminal vesicle is known as seminal Vesicle calculus

. Patients usually present aged between 30 and 45 year of age

. Seminal vesicle calculi are uncommon

PATHOGENESIS

.Stone analysis provides composition information and possible pathogenesis.

. In most cases these stones are comprised of proteinaceous material but carbonate apatite, calcium oxalate and calcium fluorophosphate stones have also been reported.

.The suggested pathogenesis for their formation includes seminal vesiculitis,

. anatomical abnormalities of the seminal vesicle predisposing to stasis and urinary reflux into the ejaculatory ducts.

CLINICAL PRESENTATI

history of passing stones or grit during ejaculation which is occasionally accompanied by pain and haematospermia.

.Ejaculatory duct obstruction secondary to calculi can occur in patients with seminal vesicle stones and can result in infertility

.These stones are occasionally palpable during rectal examination and can be some times confused with tuberculosis calcification of the seminal vesicle and vas deferens

.

NIVESTIGATIONS

.Semen analysis

.Initial serum investigations

.transrectal ultrasound (TRUS)

. MRI

.Vesiculography

MANAGEMENT

1.Open vesiculectomy : especially when these were multiple and large

2.*transurethral resection of the ejaculatory duct* (TURED) :

शुक्राश्मरी

मैथुनाभिघातादतिमैथुनदद्वा शुक्रं चलितमनिर्गच्छद्विमार्गगमनादनिलोऽभित: सन्घ मेढ वृषणयो संहरति, " संहृत्य चोपशोषयति । सा मूत्रमार्गमावृणोति, मूत्रकृच्छ्रं वस्तिवेदनां वृषणयोश्च श्वयथुमापादपीडितमात्रे च तस्मिन्नेव प्रदेशे प्रविलयमापद्यते; तां शुक्राश्मरीमिति विद्यात् ।। *(सु.नि .3/12)*

शुक्राश्मरी - बड़े मनुष्यों में शुक्र के कारण शुक्राश्मरी होती है।

कारण- अधिक वर्ष या मास तक शुक्र के वेग रोकने से अथवा अधिक स्त्री-संयोग करने से स्वस्थान से चलित शुक्र बाहर न निकल कर उलटा गमन करता है तब वायु उसे पकड़ कर मे (शिश्न) तथा वृषण (अण्ड तथा कोष) के बीच में एकत्रित करती है तथा एकत्रित कर सुखा देती है इस तरह बनी हुई वह शुक्राश्मरी मूत्र के मार्ग को रोक देती है जिससे मूत्रकृच्छ्र, वस्ति में पीड़ा तथा वृषणों में शोथ पैदा होता है एवं दबाने पर वह अश्मरी उन्ही स्थानों में लीन हो जाती है इस तरह से उत्पन्न शुक्राश्मरी को ***Seminal or Spermatic Concretions, Spermolith)*** कहते हैं